Course 10 sem 4

अनुकूलन शिक्षण विधियां-

परिचय - समावेशी शिक्षा के अंतर्गत बालको का शिक्षण किसी कार्य अथवा भाव का समायोजन अनुकूल की प्रकृति बाधिता के स्तर पर निर्भर करता है उदाहरण यदि कोई बालक अस्थि रोग से पीड़ित है तो उसके बैठने की उचित व्यवस्था करा कर उसे सामान्य पाठ्यक्रम से शिक्षा दी जाती है परंतु बालक अगर मानसिक रूप से ग्रसित है तो उसका पाठ्यक्रम अन्य बालको से अलग होगा।

इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि अनुभव देने के लिए कार्य करने की योजना कुछ इस प्रकार बनाई जानी चाहिए कि बालक सामान्य कक्षा के शिक्षण में किसी प्रत्यय का स्वरूप पूर्ण रूप से पाए अथवा अनुकूलन का मुख्य उद्देश्य सामान एवं बाधित बालकों को कुछ अधिगम अनुभव से देना होता है।

अनुदेशन का अनुकूलन---- (Adapting Instructions) कक्षा शिक्षण का वातावरण शिक्षण एवं अधिगम के अनुरूप है इस बात को सुनिश्चित करने के पश्चात ही आवश्यक हो जाता है कि सामान्य कक्षा में बालकों को विशिष्ट आवश्यकताओं की सफलता हेतु अनुदेशन आत्मक विधियां समायोजित और अनुकूल होनी चाहिए।

बाधित बालकों के लिए अनुकूलन शिक्षण आव्यूह - (Adaptation teaching strategies for disabled)-

अध्यापक को बाधित बालकों की प्रत्येक विषय अधिगम संबंधी समस्याओं को पहचान करनी चाहिए तथा रोकथाम हेतु उचित अभ्यास करने के प्रस्ताव देने चाहिए अतः अनुकूलन शिक्षण विधि द्वारा हम निम्न बिंदुओं पर कार्य कर सकते हैं।

1**. बुनियादी कौशल में सुधार-- (Improving Basic skill**)

क). शिक्षण अधिगम असमर्थ बच्चों को बातचीत संबंधी केंद्र विषय वस्तु का वर्णन करके ऐसे बच्चों जो कि पूछे गए सवाल का जवाब नहीं दे पाते उसे एकाग्रता द्वारा पूछे गए सवाल का ही जवाब देने के लिए प्रेरित करना जैसे -नाम पूछने पर नाम भी बताएं अपनी उम्र या पता नहीं।

ख). उनको उपयुक्त शारीरिक भाषा का वर्णन करके-- उनको किस स्थान पर किस प्रकार खड़े या बैठना है उसकी शिक्षा या प्रशिक्षण देना ताकि वह अपना शारीरिक संतुलन को स्थान अनुसार बनाए रखें।

ग.) विभिन्न प्रकार के संवेगो को वर्णित करने के लिए चित्र एवं कहानियों का प्रयोग करना --अर्थात ऐसे बच्चों को चित्र द्वारा कहानी बताना तथा उसे वैसे ही संबंधित कार्यों को गृह कार्य के रूप में देना जैसे चित्र दिखाकर कहानी जोड़ना या बताए गए कहानियों को अपने शब्दों में बोलना क्योंकि कुछ बच्चों का वाचन शैली विकसित होती है ऐसे बच्चे बोल पाएंगे परंतु लेखन शैली अच्छी नहीं हो पाने की वजह से लिख नहीं पाते हैं ऐसे ही स्थिति इसके विपरीत गुण वाले बच्चों में भी हो सकती है।

घ). सामाजिक कौशलों के रुकावट को दूर करना - चंकि ऐसे बालकों को सामाजिक स्वीकृति आसानी से नहीं हो पाती है जिस कारण सामाजिक कुविचार के शिकार हो जाते हैं इस कारण इन्हें समाज में सामंजस्य बैठाने में कठिनाई होती है अतः जिसके द्वारा यह समस्या उत्पन्न होती है उस अवरोधों को रोकना तथा समाज को जागृत करना कि ऐसे लोगों को सामान्य जीवन जीने का अधिकार है तथा उसे उचित अवसर देने के लिए प्रेरित करना।

कक्षा व्यवहार में सुधार -

विशिष्ट विद्यार्थियों के व्यवहार संबंधी समस्याएं उनकी शैक्षिक उपलब्धियों का मार्ग अवरुद्ध कर देती है तथा कक्षा के सामान्य बालक उन्हें स्वीकार नहीं कर पाते इसलिए बाधित विद्यार्थियों के व्यवहार संबंधी समस्याओं को सही ढंग से प्रबंधन करना बहुत महत्वपूर्ण है। अध्यापक को बाधित विद्यार्थियों के व्यवहार से संबंधित दो प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ता है यह समस्याएं हैं-

क) अनुपयुक्त कक्षा व्यवहार

ख) अल्प निपुणता अनुपयुक्त

व्यवहार के अंतर्गत स्वयं सब से लड़ना बहस करना अपने स्थान से बार-बार उठना दूसरों के साथ अंतः क्रिया ना करना अपरिपक्व तथा आवंछित व्यवहार सम्मिलित किए जाते हैं अतः इस वय्हारको सुधार करने के लिए निम्न तरीकों को शामिल किया जाता है-

1. अधिगम असमर्थ बालकों को उच्च स्तर के निर्देशन दिए जाने चाहिए-- ऐसे बालों को का शिक्षण विधि अलग प्रकार का होना चाहिए जैसे जिस उम्र के बालक है उसके अनुसार शिक्षण विधि का प्रयोग किया जाना चाहिए उदाहरण प्राइमरी स्तर के बच्चों के लिए कहानी विधि चित्र द्वारा प्रदर्शन विधि उच्च स्तर के बालकों के लिए शिक्षक सहायक सामग्री आकर्षित एवं सरल शब्दों एवं चित्र द्वारा प्रदर्शित किया जाना चाहिए।
2. चौक बोर्ड पर किसी भी क्रिया के लिए महत्वपूर्ण पद लिखे जाने चाहिए तथा हर पद के लिए वैकल्पिक रंगों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
3. प्रत्ययो को समझने के लिए चित्रों का प्रयोग करना चाहिए।
4. जीवंत शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग करें बालकों को पढ़ाने एवं समझाने के लिए सहायक सामग्री के रूप में उदाहरणों का प्रयोग करके बालकों के लिए प्रेयोग होनी चाहिए।
5. रिटंत विद्या पर जोर नहीं देना चाहिए क्योंकि ऐसे बालकों को समझने में थोड़ी परेशानी होती है अतः विभिन्न शिक्षण विधि का प्रयोग करके बालकों को उस विषय का प्रकरण या टॉपिक को समझाया जाएजिससे बालक का कॉन्सेप्ट्स साफ हो सके और बच्चा रिटर्न्स विद्या पर बल ना देकर कॉन्सेप्ट को समझने का प्रयास करें।

सामाजिक व्यवहार में सुधार (Improving social behavior) -

1. सामाजिक वातावरण को स्वस्थ रखना चाहिए- अधिगम असमर्थ बालकों को सामाजिक स्वीकृति भली-भांति मिल सके इसके लिए हमें समाज के लोगों की सोच और उसके प्रति सहानुभूति के साथ उसको सामाजिक समानता प्रदान करनी चाहिए जिससे वह समाज में साधारण नागरिक की तरह जीवन यापन कर सके।
2. समाज में इन्हें स्वीकार किया जाना चाहिए- समाज में ऐसे लोगों की स्वीकृति आवश्यक एवं प्रेम पूर्वक होनी चाहिए इन्हें समाज में यह एहसास कराया जाए किए कुछ अलग नही हैं जिससे इनमें हीन भावना ग्रसित न हो सके।
3. इनहे हीन भावना से ग्रसित नहीं होना चाहिए- ऐसे बालकों को जब हम सामाजिक स्वीकृति प्रदान करेंगे तभी ऐसे बालको में हीन भावना से ग्रसित नहीं हो सकेंगे।
4. इन्हें डांट के बजाय प्रेम पूर्वक समझाना चाहिए ऐसे बालकों को प्रेम से उसके मन के डर को हटाना है जिससे उसके अंदर आत्मविश्वास की भावना जागृत हो सके और यह समाज में अपना स्थान बना सके।